्ता f. Hariv. 7266.

स्त्रीवास्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mark. P. 58,39.

स्त्रीविज्ञित adj. = स्त्रीजित VARAH. BRH. 18, 15.

स्त्रोवित n. von einer Frau kommendes Vermögen Spr. (II) 7477.

स्त्रीषंसार m. Weibergesellschaft TS. 2,5,1,5.

स्त्रीषवं m. Weiberfreund VS. 30,6.

स्त्रीसभ n. Weibergesellschaft P. 6,2,98, Schol. ÇABBARTHAK. bei Wilson. स्त्रीसद्रपिन् adj. das Aussehen eines Weibes habend MBH. 5,7553 nach der Lesart der ed. Bomb., ेस्त्रद्रपिन् ed. Calc.

स्त्रीमुख n. die vom Weibe kommende Lust so v. a. Beischlaf Buag. P. 9,9,38.

स्त्रोसिया f. Frauenhuldigung, geschlechtlicher Verkehr mit Fr. Spr. (II) 1029. 4638.

1. स्त्रीस्वभाव m. die Natur des Weibes MBn. 3,2776. PANKAR. 1,14,74.

2. स्त्रीस्वभाव m. Eunuch Çabdam. im ÇKDR.

स्त्रीस्वद्रिपन् adj. = स्त्रीसद्विपन् MBu. 5,7553.

स्त्रीकृत्या f. ein an einem Weibe verübter Mord Katuls. 32,144.

स्त्रीकृत n. Opfer eines Weibes Kauç. 73.

स्वण (von स्वा) 1) adj. P. 4,1,87. Vop. 7,12. (f. ई Pat. zu P. 4,1,15) muliebris: न वे स्विणानि सांख्यानि सांत RV. 10,95,15. Çat. Br. 11,5, 4,9. Milch Jaán. 1,170. गर्भ AK. 3,4,12,48. लांघमन् Bhatt. 3,7. चापल 21,7. स्वीषु स्विणेषु च Bhag. P. 11,26,22. 24. den Weibern ergeben, in ihrer Gewalt stehend Trik. 3,3,234. Spr. (II) 2193. Bhag. P. 1,11,40. 4,8,65. 9,10,8. 19,1. 9. 10,10,19. 11,8,31. — 2) n. a) das Weibsvolk, die Weiber: स्वर्गे लोक बद्ध स्विणेष्याम् AV. 4,34,2. 8,6,4. R. 5,13,23. Spr. (II) 844. Çak. 67, 23. am Ende eines adj. comp. Uttarar. 88, 15 (114,2). — b) das Weibsein, Weibheit, weibliche Natur Uttarar. 78,1 (100,8). Bhag. P. 4,4,3.

ह्मिप्रा n. AV. Paat. 2,88. 4,83. Geburt eines Müdchens AV. 6,11,3. हिर्माजन m. pl. die Bewohner von Striragja Verz.d. Oxf. H. 217,b,27. ह्यास्यत m. ein Aufseher über die fürstlichen Weiber R. 2,16,3 (13, 3 Gora.).

ল্লানুর adj. nach einem weiblichen Kinde geboren d. i. auf eine Schwester folgend P. 3,2,100, Schol.

ह्याजीव m. ein durch Weiber gewonnener Lebensunterhalt (Prostitution der Frau u. s. w.) M. 11,63.

स्य und ष्ठ (von 1. स्था) adj. (f. ब्रा) am Ende eines comp. P. 3,2,4.
77. 6,2,20. gaṇa क्लादि zu P. 4,4,62. 1) stehend, sitzend, wohnend, weilend, befindlich: चिद्रश े Âçv. दिहा. 1,12,2. M. 5,75. देशालर 78.
एकासन े द्रिकेस. दिहा. 4,8. श्राट्यासन े M. 2,109. श्रायन े 4,74. इरिणा 120. पुग्य े 8,294. हिर्द े МВн. 2,819. शाला े Elephanten 3,2857. प्रासाद े 2894. शाखा े, पञ्चर ह. 2,65,5. रामगिर्पायम े МВсн. 99. RAGH.
12,15. द्रिस. 49,7. 59,1. Spr. (II) 1377. प्रवास े 5974. मञ्जूषा े Катыз.
4,63. ग्रंस े 18,394. सिंद े 22,127. राध े RAGA-TAR. 4,249. पर्वप्रम े
AK. 2,6, 1,18. ВВаниа-Р. in LA. (III) 51,11. Вызс. Р. 3,23,26. 4,1,
24. ग्राल े Райкат. 106,6. Çuk. in LA. (III) 32,13. पार्यात्र े 80 v. a.
Bewohner von Varia. Врн. S. 6,10. मानुष े unter den Menschen weilend Напу. 1380. केलप े bei R. 2,102,5. श्रप: सुर्माजनस्था: М. 11,147.

पात्री॰ Çanku. Ça. 5,8,2. म्रादित्यं वारिस्यम् so v. a. im Wasser sich abspiegelnd M. 4, 37. नानापद ° (उदात्त) RV. PRât. 20, 3. ललार ° HARIV. 12718. 12782. करलीवनमध्यस्या विद्धाः Spr. (II) 7492. कपका नितम्ब-स्वा AK. 2, 6, 2, 26. स्वाङ्गं प्राणिस्यम Kiç. zu P. 4, 1, 54. भाना नभस्त-लस्ये Улван. Ввн. S. 3, 30. क्म्भस्यातपस्यस्य 4,1. पूनर्वसुस्ये सिते (Venus) 9, 27. 30. 10, 4. 103, 5. नतंत्र (केत्) so v. a. sich zeigend 11, 4. हव-क्स्त॰ (स्वर्णकङ्कण) Hir. 11,5. — इक् R. 2,21,23. 82,14. तत्र॰ MBH. 3,2683. R. 2,57,2. R. GORR. 2,28,32. 4,53,24. 63,27. KATHAS. 7,33. 26,103. क्त R. Gora. 2,58,4. गिरिकन्दरमुधिस्य (wohl zu verbinden) 4,10,27. - 2) (in einem best. Alter, Lage, Verhältniss, Zustand) sich befindend: दशमी॰ M. 2,138. पैविन॰ MBn. 3,16641. Spr. (II) 5686. राज्य॰ (s. auch bes.) R. 2,58,19. 3,49,27. यावराड्य R. Schl. 2,35,32.58,19. प्रतभाव 73,3. म्रशोत्र • 5,33,1. प्रीति • KATHÅS. 75,2. हेष • Git. 9,10. — 3) bei Etwas seiend, beschäftigt mit, obliegend, ergeben: स्वक्रमं M. 10,1. विकर्मः 4,30. 9,214. 11,192. पाष्पाउः 9,225. यज्ञः Jáén. 1,59. यागः 3,251. सवन • 252. याग • выс. 2,48. वैतान • мвн. 13,3515. नियाग • R. 2,52,43. पापकर्म॰ 1,32,20. स्वयंवर॰ Ragh. 5,76. मान॰ Катная. 11, 69. समाधि º Pankat. 162,23. Hit. Johns. 2464. उद्यम º Spr. (II) 1767. ध्यान ° Pankar. 1,7,83. स्वधर्म ° Bhag. P. 1,17,16. कि ° Raga-Tar. 4, 646. कीर्तनस्था मृदङ्गः Spr. (II) 5567. — Vgl. श्रग्निः, श्रप्नःः, श्राह्मेः, एकः (auch Buac. P. 6,4,32), गर्भः, गद्धरेः, गिरिः, गृकः, गोः, घर्म्यः, बन ः, बल ः, तरः, त्रि ः, रिवि ः, ह्रू र ः, ह्वार ः, हि ः, धन ः, धर्म ः, नरक ः, परमे॰, पृष्ठु॰, पार्श्व॰, पिएउ॰, पूर्व॰, पृष्ठिवि॰, प्रस्तरे॰, बन्धन॰, बर्क्हिः॰, बल॰, बुडि॰, भय॰, भुवि॰, भू॰, भूत॰, भूमि॰, मध्य॰, मध्यम॰, मनः॰, मक्तः, र्यः, राज्यः, द्वपः, लिङ्गः, वनः, वयः, विन्ध्यः, विश्वः, विषमः, वीरः, वतः, वृत्ति॰, त्रत॰, शं॰, शक्ति॰, शैलेन्द्र॰, सत्तव॰, सध॰, सम॰, समीप॰, समद्रे॰, सञ्ये°, सक्॰, स्॰, स्ख॰, स्खे॰, स्प्त॰, स्थल॰, कुर्म्ये॰, ॡदि॰ und 2. स्था. स्थकर wohl = स्थगर Kaug. 35.

स्था, स्थाति Deatur. 19,28 (संवर्षा). caus. स्थापति verhüllen, verbergen: पुर: पूर्वामेव स्थापित दिशं तमःसंघातः Ratrav. 60,6. Çiç. 4,24. स्थापित पुनराष्ठं पाणिना द्त्तदृष्टम् Spr. (II) 3413. Malatim. 7,8. 149, 15 = Uttarar. 60,6 (78,2). Naish. 4,56. Varah. Brh. S. 5,6. 11. 38,4. Kathàs. 62,128. 107,78. 118,194. Sah. D. 224,9. Kuvalai. 192,b. so v. a. verschwinden machen: हाग्योष्मं स्थापतु वार्मुचामनेन्।ः Balar. 131,6. — partic. स्थानि 1) verhüllt, verborgen H. 1476. Halai. 4,58. Çiç. 9,21. Kir. 14,31. 18,4. Spr. (II) 6642. Varah. Brh. S. 3,35. 22,1. 24,16. Kathàs. 93,57. 102,83. Råga-Tar. 5,415. Sah. D. 295,7. Khandom. 107. Bhatt. 12,69. Kull. zu M. 8,203 bei Lois. चिति Verz. d. Oxf. H. 214, b, No. 511. — 2) verschlossen: हार Mark. P. 69,27. — 3) yehemmt, unterbrochen: िग्र Bhag. P. 10,90,18.

स्था। (von स्थाम्) verschlagen, verschmitzt, betrügerisch Taik. 3,1,14. Çabdar. im ÇKDr.

Eথান (wie eben) n. das Verhüllen, Verbergen H. 1477. Spr. (II) 4582. Sån. D. 15.11.

स्थाम् ein best. wohlriechender Stoff: ्रं पिनष्टि Goba. 4,2,20. — Vgl. स्थाम्, स्थकर् und तमर.

स्यगिका (wie eben) f. 1) ein best. Verband, wie er an Fingern und penis angelegt wird: Däumling Suça. 1,65,17. 66,1. 2,112,16. Wisz